SMT. LIBIA LOBO PRATAPRAO SARDESAI

Smt. Libia Lobo Prataprao Sardesai is a distinguished freedom fighter, Goa's first woman advocate, social worker, and activist on issues relating to women and consumers. She co-ran the radio station 'Voice of Freedom' against the Portuguese regime, and hers was the voice that declared to the people of Goa that they were free on December 19, 1961.

2. Born on May 25, 1924, in Socorro, Porvorim, Smt. Sardesai completed her matriculation at Antonio de Souza High School in Byculla, Bombay, and thereafter completed her B.A. in English (Hons) from Siddharth College, Bombay. During her student days, she was Secretary of the Goan Youth League working for the freedom of Goa.

3. During World War II, Smt. Sardesai worked as an Italian translator/censor in the POW British Establishment for Italian prisoners in Bombay. In 1955, she was awarded her LL.B degree from Government Law College, a course she completed while working for All India Radio, Bombay. After completing her law studies, she resigned from All India Radio to join the underground movement for Goa's Liberation. From 1955 to 1961, she was instrumental in running 'The Voice of Freedom', an underground radio station broadcasting from the forests to listeners in Goa. She ran the station along with Shri Vaman Sardesai (Padma Shri awardee) and for a short time, Shri Nicolau Menezes. The last broadcast of the radio station was the announcement of Goa's Liberation on December 19, 1961, from an Indian Air Force plane in the skies. The announcement was synchronized with the lowering of the Portuguese flag and the hoisting of the Indian tricolour for the first time on Goan soil.

4. After Liberation, Smt. Sardesai did liaison work with the Union Ministry of External Affairs connected with the repatriation of Portuguese troops in Goa. In March 1962, she was appointed Goa's first Director of Tourism. She held the post till 1968, and during her tenure, completed various projects including a colour film on Goa with the United Nations Development Programme, and helped put Goa on the tourist map of India and the world. In 1968, she left government service to start legal practice, becoming the first woman lawyer to practice in the courts of Goa.

5. Smt. Sardesai promoted and founded the first and only Women's Cooperative Bank in Goa, in Panaji in 1973. She was its Chairperson for more than ten years after its founding. The bank is still running, totally by women with women Directors. Later, in 1986, she founded and was President of the AIWC Jubilee College of Home Sciences, Goa, affiliated to Goa University. In 1973-74, she was lecturer in Constitutional Law at Salgaocar College of Law, Panaji. From 1974 to 1987, she was Vice-President, Goa Daman and Diu Advocates' Association. In 1983, she was a member of the Indian delegation to the World Peace Conference in Moscow. In 1985, she was a member of the Indian delegation to the World Conference on the United Nations Decade for Women in Nairobi, and participated on behalf of the All India Women's Conference.

6. Smt. Sardesai was felicitated by the Indian Army and Indian Navy for her collaboration in the struggle for Goa's Liberation on her 100th birthday. She was thereafter felicitated by the Chief Minister of Goa with a Certificate of Honour for her role in Goa's freedom struggle.

श्रीमती लिबिया लोबो प्रतापराव सरदेसाई

श्रीमती लिबिया लोबो प्रतापराव सरदेसाई एक सम्मानित स्वतंत्रता सेनानी, गोवा की पहली महिला अधिवक्ता, सामाजिक कार्यकर्ता और महिलाओं व उपभोक्ताओं से संबंधित मुद्दों पर सक्रिय कार्यकर्ता हैं। उन्होंने पुर्तगाली शासन के खिलाफ रेडियो स्टेशन 'वॉयस ऑफ फ्रीडम' का सह–संचालन किया और 19 दिसंबर, 1961 को उनकी आवाज ने ही गोवा के लोगों को बताया कि अब वे आज़ाद हैं।

2. 25 मई, 1924 को सोकोरो, पोरवोरिम में जन्मी, श्रीमती सरदेसाई ने बॉम्बे के बायकुला में एंटोनियो डीसूजा हाई स्कूल से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की और उसके बाद सिद्धार्थ कॉलेज, बॉम्बे से अंग्रेजी (ऑनर्स) में बीए किया। अपने छात्र जीवन के दौरान, वह गोवा की आजादी के लिए काम करने वाली गोवा यूथ लीग की सचिव थीं।

3. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, श्रीमती सरदेसाई ने बॉम्बे में इतालवी कैदियों के लिए ब्रिटिश प्रतिष्ठान पीओडब्ल्यू में एक इतालवी अनुवादक/सेंसर के रूप में काम किया। 1955 में, उन्होंने गवर्नमेंट लॉ कॉलेज से एलएलबी की डिग्री ली, यह कोर्स उन्होंने आकाशवाणी, बॉम्बे में काम करते हुए पूरा किया। कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद, वह आकाशवाणी से इस्तीफा देकर गोवा की मुक्ति के लिए भूमिगत आंदोलन में शामिल हो गईं। 1955 से 1961 तक उन्होंने 'द वॉयस ऑफ फ्रीडम' नामक भूमिगत रेडियो स्टेशन चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो जंगलों से गोवा के श्रोताओं के लिए प्रसारण करता था। उन्होंने श्री वामन सरदेसाई (पद्म श्री पुरस्कृत) और कुछ समय के लिए श्री निकोलो मेनेजेस के साथ मिलकर यह स्टेशन चलाया। रेडियो स्टेशन का अंतिम प्रसारण 19 दिसंबर, 1961 को गोवा की मुक्ति की घोषणा थी, जो आसमान में भारतीय वायु सेना के विमान से की गई थी। यह घोषणा पुर्तगाली ध्वज को नीचे उतारने और गोवा की धरती पर पहली बार भारतीय तिरंगा फहराने के साथ की गई।

4. आज़ादी के बाद, श्रीमती सरदेसाई ने गोवा में पुर्तगाली सैनिकों के प्रत्यर्पण के संबंध में केंद्रीय विदेश मंत्रालय के साथ संपर्क कार्य किया। मार्च 1962 में उन्हें गोवा का पहला पर्यटन निदेशक नियुक्त किया गया। वह 1968 तक इस पद पर रहीं और अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के साथ गोवा पर एक रंगीन फिल्म सहित कई परियोजनाओं को पूरा किया और गोवा को भारत और दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर लाने में मदद की। 1968 में उन्होंने कानूनी प्रैक्टिस शुरू करने के लिए सरकारी नौकरी छोड़ दी और गोवा की अदालतों में प्रैक्टिस करने वाली पहली महिला वकील बन गईं।

5. श्रीमती सरदेसाई ने 1973 में पणजी, गोवा में पहले और एकमात्र महिला सहकारी बैंक को प्रमोट किया और इसकी स्थापना की। इसकी स्थापना के बाद वह दस साल से अधिक समय तक इसकी अध्यक्ष रहीं। यह बैंक अब भी पूरी तरह महिलाओं द्वारा संचालित है और इसकी निदेशक भी महिलाएं ही हैं। बाद में, 1986 में, उन्होंने गोवा विश्वविद्यालय से संबद्ध एआईडब्ल्यूसी जुबली कॉलेज ऑफ होम साइंसेज, गोवा की स्थापना की और इसकी अध्यक्ष बनीं। 1973–74 में, वह पणजी के सालगांवकर कॉलेज ऑफ लॉ में संवैधानिक कानून की व्याख्याता थीं। 1974 से 1987 तक, वह गोवा, दमण व दीव अधिवक्ता संघ की उपाध्यक्ष रहीं। 1983 में, वह मास्को में आयोजित विश्व शांति सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल की सदस्य थीं। 1985 में, वह नैरोबी में संयुक्त राष्ट्र डिकेड फॉर वुमेन (महिलाओं के दशक) पर विश्व सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल की सदस्य थीं, और उन्होंने अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की ओर से इसमें भाग लिया।

6. श्रीमती सरदेसाई के 100 वें जन्मदिन पर गोवा के मुक्ति संघर्ष में उनके सहयोग के लिए भारतीय सेना और भारतीय नौसेना ने उन्हें सम्मानित किया। इसके बाद गोवा के स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के लिए गोवा के मुख्यमंत्री ने सम्मान पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया।